ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-6* Issue-5* August- 2021
Anthology : The Research

अमीर खां: एक योद्धा के रूप में
Amir Khan as a Warrior

Paper Submission: 14/08/2021, Date of Acceptance: 24/08/2021, Date of Publication:25/08/2021

शकीला नकवी
सह आचार्य,
राजनीति विज्ञान विभाग,
राजकीय स्नातकोत्तर
महाविद्यालय,टोंक,
राजस्थान, भारत

सारांश

एक वीर, सफल, कुशल, अफगान योद्धा भारत आया और यहाँ महान स्वतंत्रता सेनानी एवं देशभक्त बन गया। टोंक के संस्थापक एवं प्रथम नवाब अमीरूद्दौला अमीर खां भारतीय राजाओं के मित्र एवं अंग्रेजों के कट्टर शत्रु थे। जसवंत राव होल्कर एवं अन्य राजाओं से मिलकर अंग्रेजों को बाहर निकालने एवं देश को आजाद कराने की भरपूर कोशिश की। भारत में उन्होंने अपनी सफलता के झण्डे गाड़ दिए। फिर टोंक रियासत को संभाला।

A brave, successful, skilled, Afghan warrior came to India and became a great freedom fighter and patriot here. Amir-ud-daula Amir Khan, the founder and first Nawab of Tonk, was a friend of the Indian kings and a staunch enemy of the British. Meeting with Jaswant Rao Holkar and other kings tried his best to drive out the British and liberate the country. In India, he buried the flag of his success. Then took over the princely state of Tonk.

मुख्य शब्दः शमशीर, घमण्ड, हजरात, दिलावरी, शामिल, बलबूते, हौंसला, कारनामा, सिलसिला, लियाकत, फौजी, शोहरत, दबदबा, नुकसान, कोशिश, फायदा, लश्कर, हवाले, झांसे, तीस साला, सरगर्मियां।

Shamshir, Pride, Hazrat, Dilavari, Involved, Strong, Enthusiasm, Achievement, Silsila, Liaquat, Fauji, Fame, Domination, Loss, Effort, Advantage, Lashkar, Quote, Hoax, Thirty years old, Enthusiasm.

प्रस्तावना

टोंक रियासत के संस्थापक अमीरूद्दौला अमीरूल मुल्क नवाब मुहम्मद अमीर खां, बहादुर शमशीर जंग वीर, निर्भीक, बहादुर सैनिक, दिलेर, सफल, महान स्वतंत्रता सेनानी, सहृदय दानवीर एवं निडर व्यक्ति थे।

योद्धा के रूप में उनकी जिंदगी को पेश करती कविता जिसे साभार अमीरनामा से लिया गया है।

ईश्वर ने इन्हें अत्यन्त वीरता दी है
शेर का बच्चा शेर ही हुआ करता है

अमीर खां की विशेषताओं के बारे में लेखक बसावन लाल 'शादां' लिखते हैं।

'तू पूना के युद्ध में आगे आगे रहा
तू ने पेशवा को ही परास्त कर दिया
तेरी वजह से जसवंत राव सफल हुआ
हिन्दुस्तान में उसका नाम रोशन हो गया।
तेरी वजह से जोधपुर वाला राजा बना
तूने जयपुर के राजा का भी घमण्ड दूर कर दिया
सिंधिया तुझसे युद्ध में घबरा गया
अंत में उसने तुझसे समझौता कर लिया
जब तूने नागपुर पर जंग के लिए चढ़ाई की
तो क्रोध से उसको नष्ट कर दिया
तूने बड़े-बड़े राजाओं से भी चौथ ले ली
तुझसे प्रत्येक राजा ने देश एवं राज्य प्राप्त किया
अंग्रेज भी तुझसे लड़ने में तंग आ गए'

जब कोई व्यक्ति अपनी जीवनी या आत्मकथा लिखता है तो वह अक्सर पक्षपाती हो जाता है किन्तु इस शासक ने ऐसा नहीं किया। इसलिए अमीरनामा टोंक के इतिहास का मूल स्रोत माना जाता है। अपने जीवन के ऐतिहासिक तथ्यों और घटनाओं को अमीर खां ने बसावन लाल शादां से कलमबद्ध कराया, उन घटनाओं में जीत को जीत और हार को हार ही लिखा है।

अध्ययन का उददेश्य

टोंक के संस्थापक एवं प्रथम नवाब अमीर खां की फौजी जिंदगी को उजागर करना। इस महान स्वतंत्रता सेनानी एवं योद्धा को न केवल टोंक के इतिहास बल्कि भारतीय इतिहास में जगह दें। देश को अंग्रेजी शासन से मुक्त करने की उनकी कोशिशों एवं योगदान की चर्चा होनी चाहिए। उन्होंने ब्रिटिश शासन से जमकर टक्कर ली। अंग्रेज उनसे बहुत भयभीत रहते थे। ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी का भारत पर आधिपत्य प्रारंभ होते ही अमीर खां के स्वतंत्रता के प्रयत्नों को भारतीय जाने। भारतीय इस देशभक्त की जीवनी जाने, समझे और देश प्रेम के कार्यों में वृद्धि करें।

प्रारम्भिक जीवन

बसावन लाल शादां ने अमीर नामे में लिखा हैं

"आपको शुरू से ही सिपहगरी (युद्ध कौशल) का शौक था। न पढ़ने से लगाव था, न लिखने से, बीस साल की उम्र में 1202 हि. में अपने घर से निकल खड़े हुए। इसी धुन में कि भाग्य साथ दे। दिल में उच्च पद प्राप्त कर राज करने की तरंग थी। यात्रा के दौरान बहुत से जरूरतमंद हजरात आपके साथ जमा होकर आपके लश्कर में शामिल होते रहे और नौकरी प्राप्त करने का प्रयास करते रहे। जब आपके साथ बहुत से लोग जमा हो गए तो आपने अपनी बहादुरी, दिलावरी, शौर्य, सूझबूझ, प्रयत्न और मेहनत के बल पर स्वयं का संगठित गिरोह बना लिया और ऐसे महत्वपूर्ण कार्य अंजाम दिए कि आप की हैबत सरदारों और रजवाड़ों के सरबराहों के दिलों में बैठ गई।"

भारत आगमन-सिंधिया के साथ संबंध

वह पहले गुजरात आए। लखनऊ गए तथा बाद में मेरठ पहुँचकर गुलाम कादिर खां की फौज में शामिल हो गए। वह बचपन के दोस्तों के साथ युद्ध कौशल में व्यस्त हो गए। सर्वप्रथम वह De Boigne के पास सिंधिया की सेना में भर्ती के लिए गए। उन्हें छोटी उम्र एवं अनुभव के अभाव में सेना में शामिल नहीं किया। आप मालवा आए और खीची वाड़ा के रईसों के दिलों में उनकी बहादुरी और शौर्य का सिक्का बैठ गया। उस समय राघवगढ़ के राजा जयसिंह खींची और सिंधिया के सरदारों की आपसी लड़ाईयाँ जोरों पर थी। राघवगढ़ के राजा ने अमीर खां को मय एक हजार साथियों के अपने यहां रखकर सिंधिया के सरदारों से मुकाबला करने के लिए भेजा। अमीर खां ने सिंधिया की विशाल सेना की परवाह न करते हुए कुछ लड़ाईयाँ बड़ी सूझबूझ के साथ लड़ी कि सिंधिया की सेना का हौंसला टूट गया।[4] अमीर खां कभी उन पर भारी पड़े और कभी कमजोर लेकिन बाद में राघवगढ़ के राजा जयसिंह ने अमीर खां की तरफ कोई ध्यान नहीं दिया तो अमीर खां सिंधिया के सरदारों के निमंत्रण पर उनकी फौज में चले गए। लगभग सात महीने वहां रहे। उसके बाद भोपाल के नवाब के बुलाने पर आप वहां गए थे, लेकिन उनसे आपकी आवभगत न हो सकी।

जसवंत राव होल्कर से मित्रता

अमीर खां की आत्मकथा का पूरा तृतीय खण्ड उनके और महाराजा जसवंत राव होल्कर से मुलाकात एवं आपसी संबंधों से भरा हुआ है।[5] महाराजा जसवंत राव होल्कर भाई से विवाद के कारण कैद में थे तो मदद के लिए अमीर खां को बुलाया तो अमीर खां 1214 हि. अर्थात 1799 में शुजालपुर जाकर होल्कर से भेंट की। [6] उस जमाने में जसवंत राव होल्कर और काशी राव होल्कर दोनों भाईयों में मनमुटाव था। जसवंत राव ने अमीर खां से वादा किया कि जो मुल्क जीतेंगे। मेरे और आपके बीच में आधा-आधा बंट जायेगा।

अमीर खां ने जसवंत राव होल्कर के साथ ऐतिहासिक कारनामे अंजाम दिए जो उनके शौर्य और पराक्रम की याद ताजा करते हैं और इतिहास में अमर है। होल्कर ने अमीर खां के बलबूते पर सारे कार्य किए। जसवंत राव होल्कर ने काशीराव होल्कर पर विजय प्राप्त की जब महाराजा होल्कर ने मालवा पर अधिकार कर लिया तो अमीर खां को बहुत अधिक प्रसन्न किया और दोनों की मित्रता परवान चढ़ी।

अमीर खां ने फिर तो रूकने का नाम न लिया। वे लगातार आगे बढ़ते गए। दक्कन के राजा दौलत राव, बलवंत राव बांकड़ा आदि सेनाओं को भी अमीर खां ने परास्त किया। खानदेश, दौलताबाद, नारायणगढ़ की विजय अमीर खां का ही कारनामा है।

उनकी विजयों का सिलसिला जारी रहा। उन्होंने पूना की विजय, बाजीराव पेशवा की पराजय, अमृत राव पेशवा, युवराज, श्रीमंत रघुनाथ राव का राज्याभिषेक, माड के किले की विजय, जयपुर व जोधपुर का विवाद सुलझाना इत्यादि अनेक कार्य किए जो अमीर खां की बहादुरी और उनकी दूरदृष्टि तथा शौर्य व पराक्रम को सिद्ध करती है। सागर, महलेसर, उड़िया, बरार, बुन्देलखण्ड, कालपी, बड़ौदा, मालवा, भरतपुर और राजपूताना क्षेत्र, शेरकोट और अफजलगढ़ व इब्राहिमपुर आदि हिन्दुस्तान के स्थानों पर अमीर खां ने अपनी बहादुरी के झण्डे गाढ़े और इतिहास में अपना नाम लिखवाया।

अमीर खां की सैन्य शक्ति

एच.टी. प्रिंसेप के अनुसार 'अमीर खां की फौजी जिंदगी पर ही अमीरनामा लिखा गया है।8
अमीर खां की वीरता के विषय में कुछ पद्यः-
'अमीर खां रणक्षेत्र में ऐसे आए
जैसे दहाड़ता हुआ कोई सिंह हो अथवा मस्त गज हो।'
नवाब अमीर खां ने अपने अंदर ऐसी लियाकत और युद्ध कौशल के जोहर पैदा किए कि थोड़े ही समय में आपकी धाक और आपका सिक्का लोगों के दिलों में बैठ गया। नितप्रति आपने अपना फौजी सामान बढ़ाया और फौज में वृद्धि की और एक ऐसी ताकत बनकर उभरे कि 1215 ई. में जब आप सिरोंज गए तो आपके साथ फौज में लगभग 80 हजार सवार और प्यादे मौजूद थे। अमीर खां की शोहरत और उनकी फौजी अहमियत की वजह से वे दूर-दूर तक छाए रहे। उनकी इस खूबी की वजह से बादशाह काबुल शाह शूजा ने 1239 हि. में उनको काबुल बुलाया और मदद चाही। जब शाह शूजा अमीर खां के लिए संबोधन करते है- बड़ों में सबसे बड़े, प्रसिद्ध व्यक्तियों में उच्च स्थान प्राप्त, बड़े खानदानों में महत्वपूर्ण स्थान रखने वाले वीर अमीर खां, तो वह उनकी वीरता को दर्शाता है और जब जसवंत राव होल्कर से की गई संधि पर अंग्रेज अमीर खां से प्रमाणित करवाते है। अंग्रेज अमीर खां से

डरे हुए थे तो यह उनकी दिलेरी और वीरता का दिखाता।[10]

अमीर खां की सैन्य शक्ति के बारे में मौलाना सैयद अबुल हसन अली नदवी लिखते हैं

'उस समय हिन्दुस्तान में चार बड़ी ताकतें थी..... इन चार ताकतों के अलावा पांचवीं बढ़ती हुई ताकत थी जिसे वक्त का कोई मुबस्सिर (इतिहासकार) नजरअंदाज नहीं कर सकता था। यह रूहेलखण्ड के अफगानों की ताकत थी जिसकी कयादत (नेतृत्व) सम्भल (जिला मुरादाबाद) का एक हौंसलामंद अफगान जादा अमीर खां कर रहा था। जिसको मराठा सरदार और राजपूत रियासतें हमेशा अपने साथ मिलाने की कोशिश में रहा करती थी।[11]

डॉ. कानूनगो के अनुसार, अमीर खां जिसने अंग्रेजों के नाक में दम कर रखा था, जिसका दबदबा और भय का सिक्का चलता था। अमीर खां का नाम सुनते ही अंग्रेजों के पैरो के नीचे जमीन खिसक जाती थी। डॉ. अनुजा शर्मा ने बताया कि अमीर खां के साथ इतिहास ने न्याय नहीं किया। अगर उनके मिशन को समझ लिया जाता तो शायद हिन्दुस्तानियों को विदेशी शासन के क्रूरतापूर्ण दिन नहीं देखने पड़ते।[12]

अमीर खां की सैन्य शक्ति व क्षमता के बारे में गुलाम रसूल महर ने लिखा है कि

'किसी जमाने में सवार फौज की तादाद (संख्या) एक लाख तक पहुँच गई थी। एक मौके पर एक सौ पन्द्रह तोपें उसके पास थी।'

अमीर खां की फौजी ताकत और उनकी अज्म आराई और जंग आराई इस कदर बढ़ी कि राजपूताना, मारवाड़, मेवाड़, मालवा यहां तक की सरजमीनें दकन और काबुल की सरजमीन उनकी फौजी जौलान गाहें बनी रही। वह बीस से पच्चीस साल के लंबे अर्से तक इधर उधर फिरते रहे और अपनी फौजी ताकत, शौर्य और प्रशंसा में वृद्धि प्राप्त करते रहे। चूंकि उनमें सब सैन्य गुण मौजूद थे। उनमें उलूल अज्मी, फय्याजी, फौज के सिपाहियों के साथ सद्व्यवहार, आत्म शक्ति और सहन शक्ति बहुत ज्यादा थी।[13]

भारतीय राजनीति पर प्रभाव

तत्कालीन भारतीय राजनीति में योद्धा अमीर खां के आगमन का गहरा प्रभाव पड़ा। 18वीं सदी के अन्त और 19वीं सदी के प्रारंभ में जब हिन्दुस्तान में अफरा-तफरी मची थी। अंग्रेजों का सितारा हर रोज बुलंद से बुलन्दतर हो रहा था। जिसका मुकाबला करने की हिन्दुस्तानियों में ताकत न थी। सारी ताकतें अंग्रेजों की गुलाम बन चुकी थी। हिन्दुस्तान की तारीख में अगर कोई ताकत अंग्रेजों से मुकाबला कर सकती थी तो वह सिर्फ अमीर खां की ताकत थी। उस वक्त अमीर खां के साथ रोहेलखण्ड के पठानों और उत्तरी हिन्दुस्तान के बहादुरों और दिलेरों की ताकतवर फौज मौजूद थी। अमीर खां के पास इस फौजी संगठनों के अलावा फौजी व जंगी साजो-सामान भी बहुत था जिसकी वजह से उनका दबदबा और शोहरत बहुत ज्यादा थी।[14]

इससे सिद्ध होता है कि उन्होंने जसवंत राव होल्कर एवं अन्य भारतीय शासकों की मदद की। उन्हें सफलता की ओर अग्रसर किया। जसवंत राव होल्कर और अमीर खां ने मिलकर अंग्रेजी सेना का नाक में दम कर दिया और अंग्रेजी सेनाओं पर जोरदार आक्रमण किए कि अंग्रेजों को बहुत नुकसान उठाना पड़ा।

महान स्वतंत्रता सेनानी अमीर खां अंग्रेजों के कट्टर विरोधी थे। अपनी बहादुरी और दिलेरी से उनको हिन्दुस्तान से निकालने की न केवल सोच चुके थे बल्कि देश को अंग्रेजों से आजाद कराने की भरपूर कोशिश भी की थी। वह राजपूताना के राजाओं एवं मराठा सरदारों के मित्र थे किन्तु अंग्रेजों के कट्टर शत्रु थे।

हिन्दुस्तान से प्रेम की भावना से वशीभूत होकर ही आपने अंग्रेजों के खिलाफ आवाज़ उठाई।[15]

भारतीय राजनीति पर अमीर खां का निर्णायक प्रभाव पड़ा था कि जिस जिस फौज में वह सम्मिलित होते थे, सिर्फ उनका सम्मिलित होना ही अक्सर अवसरों पर हार और जीत का परिणाम तय करने वाला हो जाता था।

अमीर खां इस मुल्क से अंग्रेजों को निकालने पर यहां तक आमदा हुए कि उन्होंने बहुत जल्दी ही अमृतसर जाकर महाराजा रंजीत सिंह से सहायता प्राप्त करनी चाही।

अंग्रेजों ने भारतीय राजनीति की अस्थिरता व मनमुटाव का भरपूर फायदा उठाया और 'फूट डालो राज करो' की नीति प्रारंभ कर दी। अंग्रेजों ने जसवंत राव होल्कर से संधि कर इंदोर, मालवा और आसपास का इलाका देकर खामोश कर दिया। अमीर खां को अकेला छोड़ दिया, फिर अंग्रेजों ने आगरा व दिल्ली से भारी सेना व तोपखाने के साथ चढ़ाई शुरू कर दी और अंग्रेज सेना अमीर खां के लश्कर के दो हिस्सों के बीच में घुस गई। अंग्रेजों ने 1 लाख 24 हजार सैनिक अमीर खां के विरूद्ध युद्ध में उतारे और उनके कई सरदारों को तोड़ भी लिया। अब अमीर खां को ये अंदेशा था कि ये सरदार उनको अंग्रेजों के हवाले न कर दें।

स्वतंत्रता संग्राम का यह योद्धा अंग्रेजों के झांसे में फंस गया। अंग्रेजों ने अमीर खां को संधि पत्र भेजा। अब एक ही रास्ता था। 9 नवम्बर 1817 ई. को अमीर खां के वकील ने इस संधि पत्र पर हस्ताक्षर किए और 15 नवम्बर 1817 को इस संधि को गवर्नर जनरल ने प्रमाणित किया।

इस प्रकार संधि से अमीर खां की तीस साल की योद्धा के रूप में सरगर्मियाँ समाप्त हो गई। हिन्दुस्तान की बेहतरीन फौजी ताकत को तितर-बितर कर दिया। उनका तोपखाना खरीद लिया।

ईस्ट इंडिया कम्पनी और अमीर खां के मध्य संधि हुई जिसमें 8 धाराएँ थी जिसके तहत उन्हें टोंक रियासत का नवाब (पहला नवाब) और राज्य दिया। उन्होंने संधि की जिसके अनुसार टोंक रियासत के लिए आवश्यक सेना को छोड़कर सारी सेना अंग्रेजों को सौंप दी। ये भी शर्त थी कि वे किसी पर हमला नहीं करेंगे। इस प्रकार अंग्रेजों ने राजस्थान में एक मात्र मुस्लिम राज्य की स्थापना की।

निष्कर्ष

इस प्रकार हम देखते हैं कि नवाब अमीर खां ने भारत में अपनी वीरता और शौर्य के बल पर सफलता हासिल की। भारतीय राजाओं की मदद की। उनको युद्धों में विजय दिलाई। बड़ी-बड़ी हुकुमतें और रियासतें उन्हें अपने साथ सम्मिलित करना चाहती थी, अंग्रेजी शासन से मुक्ति पाने के उन्होंने हरसंभव कोशिश की।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *शादां, मुंशी बसावन लाल, अनुवादक, खां, मोहम्मद रियाजुद्दीन एवं सिंघल, हनुमान प्रसाद, 'अमीरनामा', अरबी फारसी शोध संस्थान, राजस्थान, टोंक, 2003, पृ. 292 एवं 287*
2. *उपर्युक्त, पृ. 22-23 एवं*
3. *खान, साहिबजादा मुहम्मद अब्दुल मोईद, रियासत टोंक के हुक्मराने जीशान भाग प्रथम, मौलाना अबुल कलाम आजाद, अरबी फारसी शोध संस्थान, टोंक 2011, पृ. 22*
4. *उपर्युक्त, पृ. 21*
5. *शादां, मुंशी बसावन लाल, अनुवादक, खां, मोहम्मद रियाजुद्दीन एवं सिंघल हनुमान प्रसाद, अमीरनामा, मौलाना अबुल कलाम आजाद अरबी फारसी शोध संस्थान, राजस्थान, टोंक, 2003, 62-269*
6. *उपर्युक्त, पृ. 65*
7. *खान, साहिबजादा मोहम्मद मोईद, रियासत टोंक के हुक्मराने जीशान, भाग प्रथम (टोंक का इतिहास), मौलाना अबुल कलाम आजाद, अरबी फारसी शोध संस्थान, टोंक, 2011, पृ. 22*
8. *शादां, मुंशी बसावन लाल, अनुवादक खां, मोहम्मद रियाजुद्दीन एवं सिंघल, हनुमान प्रसाद, 'अमीर नामा', मौलाना अबुल कलाम आजाद अरबी फारसी शोध संस्थान राजस्थान, टोंक 2003, पृ. 23*
9. *उपर्युक्त पृ. 110*
10. *डॉ. अनन्ता माथुर, रिसर्च पेपर अमीर खां के विदेशों से संबंध, 16-17 अगस्त 2021 दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय ई कांफ्रेंस, भारतीय इतिहास का बहुआयामी व्यक्तित्व, टोंक नवाब अमीर खां।*
11. *सीरत सैयद अहमद शहीद र.अ. भाग एक कृते मौलाना सैयद अबुल हसन नदवी, पृ. 133-134*
12. *डॉ. अनुजा शर्मा, रिसर्च पेपर अमीर खां का व्यक्तित्व 16-17 अगस्त 2021 दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय ई कांफ्रेंस, भारतीय इतिहास का बहुआयामी व्यक्तित्व, टोंक नवाब अमीर खां।*
13. *सैयद अहमद शहीद, र.अ. भाग एक कृते गुलाम रसूल महर पृ. 89*
14. *तहरीके आजादी में उलैमा का किरदार 1807 ई. से पहले, लेखक फैसल अहमद भटकली नदवी पृ. 313-314*
15. *डॉ. रेणु वर्मा, रिसर्च पेपर "अमीर खां और उनके वंशज" 16-17 अगस्त 2021 दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय ई कांफ्रेंस, भारतीय इतिहास का बहुआयामी व्यक्तित्व, टोंक नवाब अमीर खां।*